* P A P – 1 6 0 7 0 1 0 1 0 3 0 2 0 0 *

PAP-16070101030200 Seat No. _____

B. R. S. (Sem. III) (CBCS) (W.E.F.-2016) Examination

October / November – 2018

Hindi : FND-5

(New Course)

Time : $2\frac{1}{2}$ Hours] [Total Marks : **70**

सूचना : सभी प्रश्नों के उत्तर सूचनानुसार दीजिए ।

१ एकांकी कला के तत्त्वों पर प्रकाश डालिए । १५

अथवा

१ 'स्ट्राइक' एकांकी का कथानक लिखिए । १५

२ 'प्रतिशोध' एकांकी के आधार पर श्रीधर का चरित्र–चित्रण कीजिए । १५

अथवा

२ 'रीढ़ की हड्डी' एकांकी का कथानक अपने शब्दों में लिखिए । १५

३ निम्नांकित में से किन्हीं तीन ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : १५

(१) ''अपनों से प्रेम का प्रदर्शन नहीं किया जाता ।''

(२) ''क्या जवाब दूँ बाबूजी ! जब कुर्सी–मेज बिकती है तब दुकानदार कुर्सी–मेज से कुछ नहीं पूछता, सिर्फ खरीददार को दिखला देता है । पसन्द आ गयी तो अच्छा है, वरना..... ।''

(३) ''मनुष्यों के लिए तो लोगों ने अस्पताल खोल ही रखे हैं । इन बेचारे पशु–पक्षियों को भी कोई पूछने वाला हो ? मैं तो जब किसी पशु–पक्षी को दुःखी–बीमार देखूँ, हूँ दया के मारे जी भर आवे हैं ।''

(४) ''अनुशासन की मर्यादा पर बड़े से बड़े व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है ।''

(५) ''आप कहते हैं, मैं औरत को समझ नहीं पाता । जनाब, यह सब कोरी बातें ! समझने की क्या जरूरत है ? मशीन की एक पुली दूसरी पुली को नापने, जोखने, समझने नहीं जाती ।''

४ 'पर्दे के पीछे' एकांकी में व्यक्त भ्रष्टाचार की समस्या को चित्रित कीजिए । १५

अथवा

४ ''और वह जा न सकी'' एकांकी की नायिका शारदा की चारित्रिक विशेषता स्पष्ट कीजिए । १५

५ निम्नलिखित परिच्छेद का सारलेखन कीजिए : १०

भारत का पर्वतीय सौंदर्य अलौकिक है । उत्तर दिशा में दूर–दूर तक पर्वत शृंखलाएँ फैली हुई है । उनकी गगनचुम्बी चोटियों पर बादल मँडराते रहते हैं तथा बर्फ गिरती रहती है । विविध मौसम गर्मी, शरद, वर्षा एक ही साथ चलते रहते हैं । झर–झर झरने प्रवाहित होते रहते हैं । नदियों के उद्‌गम स्त्रोतों की कल–कल ध्वनि गूँजती रहती है । विभिन्न उपयोगी जड़ी बूटियाँ इस क्षेत्र में उपलब्ध है । अनेक जीवजन्तु इन पर निवास करते हैं । ऋषि–मुनि वहीं पर एकान्त साधना में मग्न रहते हैं । इधर–उधर उगी हुई घास तथा देवदारु आदि के लम्बे–लम्बे वृक्ष इस प्रदेश में हरीतिमा व्याप्त करते हैं । प्रातः एवं सायंकाल सूर्य पर्वत शृंगों पर स्वर्णिम, गुलाबी, लाल रंग विकीर्ण कर प्रकृति सुन्दरी को सजाता है । रात्रि में चन्द्रमा अवनी शुभ, शीतल तथा मनोहारिणी चाँदनी से प्रकृति नारी के तन को शृंगारित करता है । ओस की बूँदे उसे विविध अलंकार पहनाती है । यह सब देखकर ऐसा लगता है मानो इस रूप में ईश्वर ने अपनी सुरुचि का परिचय दिया है ।

अथवा

मोहल्ले में फैली गंदकी को हटाने के लिए नगरपालिका अधिकारी को पत्र लिखिए ।